



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना और शैलीगत विशेषताएँ

¹ श्रीमती इमला नौरे, ² डॉ. शोभना जैन, ³ डॉ. रचना तैलंग

¹ शोधार्थी (हिन्दी), ² प्राध्यापक (शोध निर्देशक), हिन्दी साहित्य, ³ प्राध्यापक (शोध सह-निर्देशक), हिन्दी साहित्य

¹ बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

शोध सारांश

गोंड जनजाति की सांस्कृतिक विरासत में लोकगीतों का विशेष स्थान है, जो उनके सामाजिक, धार्मिक एवं भावनात्मक जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। यह शोध-पत्र गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना एवं शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में यह पाया गया कि गोंडी गीतों में ध्वन्यात्मक लय, अनुप्रास, प्रतीकात्मकता, और छंदबद्धता के माध्यम से गहराई से भावों को अभिव्यक्त किया जाता है। गीतों की शब्दावली में स्थानीय जीवन, प्रकृति, कृषि संस्कृति और पारिवारिक संबंधों की झलक मिलती है। गोंडी गीतों की शैली में भाव, बिंब, लयात्मकता और सांस्कृतिक प्रतीकों का सुंदर संयोजन देखने को मिलता है, जो उन्हें साहित्यिक दृष्टि से भी समृद्ध बनाता है। यह शोध-पत्र गोंड लोकसाहित्य के संरक्षण और उनके भाषिक सौंदर्य की समझ को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द : गोंड जनजाति, गोंडी लोकगीत, भाषिक संरचना, शैलीगत विशेषताएँ, अनुप्रास, प्रतीकात्मकता, छंद, लोकसंस्कृति।

प्रस्तावना :

भारत की जनजातीय संस्कृति अपनी विविधता, मौलिकता और परंपरा में अद्वितीय है। इस सांस्कृतिक बहुलता में गोंड जनजाति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और ओडिशा सहित देश के कई हिस्सों में निवास करती है। गोंड समाज की सांस्कृतिक चेतना का सबसे जीवंत माध्यम उसके लोकगीत हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के रूप में संरक्षित होते आए हैं।

गोंडी लोकगीत न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि वे समुदाय की सामूहिक स्मृति, जीवन दर्शन, पर्यावरणीय ज्ञान, रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था के संवाहक भी हैं। इन गीतों में प्रयुक्त भाषा 'गोंडी' एक द्रविड़ मूल की भाषा है, जो अपनी ध्वन्यात्मक लय, शब्द विन्यास और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती है।

गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना और शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें न केवल उनके साहित्यिक स्वरूप से परिचित कराता है, बल्कि जनजातीय समाज की भावनात्मक गहराइयों, सांस्कृतिक मूल्यों और जीवन के सौंदर्यबोध को भी उद्घाटित करता है।

यह शोध-पत्र इस दिशा में एक प्रयास है, जिसमें गोंडी लोकगीतों की ध्वन्यात्मकता, शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास, अलंकारों, प्रतीकों, बिंबों और भावात्मक तत्वों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य गोंडी गीतों की भाषिक समृद्धि और शैलीगत गरिमा को साहित्यिक विमर्श में उचित स्थान देना है।

गोंडी भाषा की विशेषताएँ :

गोंडी भाषा गोंड जनजाति की मूल भाषा है, जो भारत के मध्य एवं दक्षिणी भागों में विशेषकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश में बोली जाती है। यह भाषा न केवल गोंड समुदाय की संवाद प्रणाली है, बल्कि उसकी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक संरचना की जीवित अभिव्यक्ति भी है। गोंडी लोकगीतों में इस भाषा का सौंदर्य, संगीतिकता और सांस्कृतिक गहराई स्पष्ट परिलक्षित होती है।

- भाषा परिवार और वर्गीकरण** - गोंडी भाषा द्रविड़ भाषा परिवार की शाखा है। यह तेलुगु, कन्नड़, तमिल और मलयालम जैसी भाषाओं से ऐतिहासिक रूप से जुड़ी मानी जाती है। इसकी कई उपभाषाएँ हैं, जैसे कि देवार, कोया, मरिया आदि।
- लिपि एवं लेखन परंपरा** - गोंडी भाषा का मूलतः मौखिक स्वरूप रहा है। कुछ क्षेत्रों में देवनागरी, तेलुगु, या गोंडी लिपि में लेखन आरंभ हुआ है। 20वीं शताब्दी में गोंडी के लिए अलग लिपि विकसित की गई जिसे "मसराम गोंडी लिपि" कहा जाता है।
- ध्वन्यात्मक संरचना** - गोंडी भाषा में स्वरों और व्यंजनों का सामंजस्यपूर्ण उपयोग होता है। ध्वनियाँ गीतों में विशेष रूप से लयात्मकता और ताल के साथ प्रयुक्त होती हैं। अनुप्रास और ध्वनि पुनरावृत्ति का प्रचुर प्रयोग लोकगीतों को संगीतमय बनाता है।
उदाहरण : "नाना नाना देवा, जोगा जोगा रे"
इसमें 'न' और 'ज' ध्वनियों की पुनरावृत्ति गीत की संगीतिक लय को निखारती है।
- शब्दावली** - गोंडी शब्दकोश में अधिकतर शब्द प्राकृतिक परिवेश, कृषि जीवन, सामाजिक संबंधों और धार्मिक प्रतीकों से संबंधित होते हैं। बहुत-से शब्दों की उत्पत्ति स्थानीय बोलचाल और पर्यावरणीय अनुभवों से होती है।

तालिका क्रमांक - 1

गोंडी शब्दावली के उदाहरण

क्र.	गोंडी शब्द	अर्थ (हिन्दी में)
01	पोदी	पर्व/त्यौहार
02	बिल्ला	पशु
03	माड़ी	घर
04	गावा	गाँव
05	मोरचा	युद्ध/संघर्ष

- व्याकरणिक संरचना** - वाक्य रचना सरल होती है -

सामान्यतः कर्ता + कर्म + क्रिया क्रम।

वचन, लिंग, काल आदि के सूचक विशेष प्रत्यय पाए जाते हैं। लोकगीतों में व्याकरणिक नियमों की अपेक्षा भाव और लय को प्रधानता दी जाती है।

उदाहरण : "माई बोलो, पाटला चलो।"

यहाँ भाव, आदेश और काव्यात्मक प्रवाह साथ-साथ हैं।

- प्रभाव और संपर्क** - गोंडी भाषा पर मराठी, हिंदी और तेलुगु जैसी भाषाओं का प्रभाव कुछ क्षेत्रों में देखा गया है। तथापि, लोकगीतों में गोंडी की मौलिकता और विशिष्टता अक्षुण्ण रहती है।

गोंडी भाषा एक पूर्ण और आत्मनिर्भर जनजातीय भाषा है, जिसमें जीवन, प्रकृति, समाज और भावनाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति संभव है। इसकी ध्वनि-लय, गत्यात्मकता और सांस्कृतिक अंतर्वस्तु इसे न केवल लोकगीतों की भाषा बनाती है, बल्कि एक जीवंत लोक-साहित्यिक परंपरा का आधार भी बनाती है।

भाषिक संरचना :

गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना उनके सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक पहलुओं की जीवंत अभिव्यक्ति का माध्यम है। इन गीतों में प्रयुक्त भाषा में लोक-जीवन की सहजता, प्रकृति की निकटता, और भावों की गहराई का अनुठा सम्मिलन दिखाई देता है। इसकी संरचना निम्न प्रमुख पक्षों में देखी जा सकती है:

- ध्वन्यात्मक संरचना** - गोंडी गीतों में ध्वनि की लयात्मकता और तालबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। स्वरों और व्यंजनों की पुनरावृत्ति से गीतों में एक संगीतमय प्रवाह उत्पन्न होता है, जिससे जनसामान्य उन्हें सहजता से याद रख पाता है। उदाहरण : “नाना नाना देवा, जोगा जोगा रे...”
यहाँ 'न' और 'ज' ध्वनियों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न अनुप्रास गीत की ध्वनि-संवेदना को सशक्त बनाती है।
- शब्द-चयन** - गोंडी लोकगीतों की शब्दावली में मुख्यतः स्थानीय पारिस्थितिकी, कृषि जीवन, पारिवारिक रिश्ते, देवी-देवता, तथा प्रकृति से जुड़े प्रतीक शामिल होते हैं। शब्द सरल, भावप्रवण एवं बहुअर्थी होते हैं।

तालिका क्रमांक - 2

गोंडी भाषा शब्द-चयन के उदाहरण

क्र.	गांडी शब्द	अर्थ (हिन्दी में)	संदर्भ
01	गावा	गाँव	सामूहिकता का प्रतीक
02	पाटला	नदी/जलधारा	जीवनधारा का संकेत
03	माड़ी	घर/निवास	मातृत्व और सुरक्षा
04	दाई	माँ	वात्सल्य और श्रद्धा
05	जोगा	देवता	भक्ति का बिंब

- वाक्य-विन्यास** - गोंडी भाषा की वाक्य संरचना प्रायः कर्ता\$कर्म\$क्रिया क्रम का पालन करती है। गीतों में यह क्रम कभी-कभी लयात्मकता हेतु बदला जाता है, जिससे भाव की प्रधानता बनी रहती है। उदाहरण : “आयो बाघ, भागे लोग”
संक्षिप्त, संप्रेषणीय, और क्रियाप्रधान वाक्य संरचना।

“माई पुकारे, बेटा चले”

कर्ता (माई) + क्रिया (पुकारे), फिर कर्ता (बेटा) + क्रिया (चले) - दो घटनाओं की युग्मित प्रस्तुति।

- लिंग, वचन और काल की अभिव्यक्ति** - गोंडी भाषा में लिंग एवं वचन को दर्शाने के लिए शब्दों में परिवर्तन किए जाते हैं, विशेषकर क्रिया-पदों में। लोकगीतों में लय बनाए रखने हेतु ये बदलाव कभी-कभी सांकेतिक होते हैं।

उदाहरण:

- “गोंडिन गावे गानी रे” - यहाँ ‘गोंडिन’ स्त्रीवाचक रूप है, और ‘गावे’ स्त्री क्रिया रूप।
- “गोंडा नाचे गाथा रे” - ‘गोंडा’ पुल्लिंग रूप, ‘नाचे’ क्रिया।

- संधि और समास का प्रयोग** - गोंडी गीतों में संयुक्त शब्द, रचना-संक्षेप तथा ध्वनि-संक्रमण से अर्थ की गहराई और काव्यात्मक सौंदर्य बढ़ता है।

उदाहरण :

- “जंगलभोगा” - जंगल + भोगा (प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग)।
- “धरतीसुता” - धरती + सुता (पृथ्वी की संतान = नारी या किसान)।

गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना अत्यंत समृद्ध, सहज एवं संप्रेषणीय है। यह न केवल जनजातीय सौंदर्यबोध का द्योतक है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, भावनाओं और सामूहिक चेतना का भी प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है। गीतों की ध्वनि, शब्द, वाक्य और रचना-संरचना मिलकर उन्हें विशिष्ट बनाती हैं।

शैलीगत विशेषताएँ :

गोंडी लोकगीतों की शैली उनकी आत्मा है। इन गीतों की रचना-शैली में न केवल सौंदर्यबोध और काव्यात्मकता दिखाई देती है, बल्कि लोकजीवन की सहजता, भावनात्मक गहराई और प्रतीकों की समृद्ध परंपरा भी विद्यमान रहती है। गोंड जनजाति का मौलिक सौंदर्यबोध इन गीतों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

1. **अनुप्रास** - ध्वनियों की पुनरावृत्ति के माध्यम से गीतों में लय और संगीत उत्पन्न होता है। यह गोंडी गीतों की सबसे प्रमुख शैलीगत विशेषता है। उदाहरण : “नाना नाना देवा, जोगा जोगा रे...”

‘न’ और ‘ज’ ध्वनि की पुनरावृत्ति से अनुप्रास अलंकार उत्पन्न होता है जो गीत को संगीतमय बनाता है।

2. **पुनरुक्ति** - कुछ शब्द या वाक्यांशों की बार-बार पुनरावृत्ति गीत में भाव की तीव्रता को बढ़ाती है।

उदाहरण : “चाले रे चले, बाघ चले, लोग चले, पग चले...”

यहाँ “चले” शब्द की पुनरावृत्ति से गति, भय और भीड़ की अभिव्यक्ति एक साथ होती है।

3. **प्रतीकात्मकता** - गोंडी गीतों में प्रकृति के तत्व जैसे नदी, पहाड़, जंगल, जानवर आदि प्रतीकात्मक रूप से प्रयुक्त होते हैं जो भावनाओं को व्यंजित करते हैं। उदाहरण :

- “पाटला बोले तो जल दुखी” - यहाँ ‘पाटला’ (नदी) दुखी हृदय का प्रतीक बनती है।

- “धरती रोये तो बिटिया बिछुड़ी” - “धरती” यहाँ मातृत्व की प्रतीक बनती है।

4. **बिंब विधान** - गीतों में दृश्यात्मकता उत्पन्न करने वाले शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है जिससे श्रोता या पाठक दृश्य की कल्पना कर सके। उदाहरण :

“काले बदरा गगन मंडराए, माई के माथे जैसे छाया” - यहाँ बादल और माँ की छाया की तुलना कर एक कोमल दृश्य रचा गया है।

5. **छंद और लय** - हालांकि गोंडी गीतों में पारंपरिक संस्कृत छंदों का प्रयोग नहीं होता, फिर भी उनमें मौलिक लोकलय विद्यमान रहती है। दोहे, चौपाई जैसे आकारों में कभी-कभी छंदों की छाया मिलती है। उदाहरण : “भोर भयो, पग चला, खेत में हल चला” - यह पंक्ति छंदात्मक लय में लिखी गई है।

6. **भावनात्मक शैली** - गोंडी गीतों की सबसे बड़ी विशेषता है दृ भाव-प्रधानता। इनमें करुणा, प्रेम, उल्लास, भक्ति, वीरता सभी भावों का चित्रण सहजता से होता है।

उदाहरण : “माई रोए, बेटा जाए, पहाड़ रस्ता छुपाए” - यहाँ करुणा और मातृत्व दोनों का भाव अत्यंत गहराई से व्यक्त होता है।

7. **संवादात्मकता** - कई गीतों में संवाद की शैली अपनाई जाती है, जैसे माँ-बेटी, पति-पत्नी, ग्रामदेवता और ग्रामवासी के बीच वार्तालाप। उदाहरण : बेटी : “काहे बुलाए माई रे?”, माँ : “दूध गरम है, भूख की बाई रे।” यह गीत संवाद के रूप में घरेलू स्नेह को व्यक्त करता है।

8. **लोक-संस्कृति का प्रतिबिंब** - शैली में गोंड समुदाय की जीवनशैली, रीति-रिवाज, व्रत-त्योहार, कृषि जीवन और धार्मिक आस्था का सीधा चित्रण होता है। उदाहरण : “हल चलाए बापू, गीत गाए माई”, कृषि और परिवार का समन्वित चित्रण।

गोंडी लोकगीतों की शैली न केवल भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि वह जनजातीय जीवन के सौंदर्य और दर्शन का भी संवाहक है। इनमें प्रयुक्त शैलीगत उपकरण जैसे अनुप्रास, बिंब, प्रतीक और पुनरुक्ति, गीतों को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। यह शैली गीतों को केवल मौखिक परंपरा में सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्य से भी संपन्न बनाती है।

सांस्कृतिक अंतर्संबंध :

गोंडी लोकगीत केवल गीत नहीं हैं, वे गोंड जनजाति की संस्कृति, परंपरा, इतिहास और सामुदायिक जीवन की जीवंत दस्तावेजी अभिव्यक्ति हैं। इन गीतों के माध्यम से गोंड समाज की सामूहिक स्मृति, जीवनशैली, मूल्यबोध, धार्मिक आस्था, पर्यावरणीय दृष्टिकोण, तथा सामाजिक संरचना का विस्तृत चित्रण सामने आता है। गोंडी गीतों में संस्कृति एक अंतःप्रवाही तत्व के रूप में विद्यमान है।

1. **जीवन चक्र पर आधारित गीत** - गोंड जनजाति के प्रमुख जीवन अवसरों कृ जैसे जन्म, नामकरण, विवाह, मृत्यु आदि कृ पर विशेष गीत गाए जाते हैं। ये गीत परंपरा, रीति-रिवाज और भावनाओं का सांस्कृतिक दस्तावेज होते हैं। उदाहरण :

- जन्म गीत : “बिटिया आई माई के द्वार, धरती मुस्काई, सूरज पुकार।”

- विवाह गीत : “बिरादरी बोले, ढोल बजे, नवेली चली पीहर से ससुराले ।”
- 2. **मौसमी और कृषि गीत** - खेती-बाड़ी गोंड समाज का मूल आधार है। बोवाई, कटाई, वर्षा के स्वागत, या उत्सव पर गीत गाए जाते हैं जो खेती को देवी मानकर आराधना करते हैं। उदाहरण :
 - “पाटला बरसे रे, बीज जगे रे, धरती बोले, हरियर फले रे ।”
 - “हल जोते बापू, गीत गाए माई, खेत बोले हरषाए ।”
- 3. **धार्मिक और आस्था गीत** - गोंड समाज प्रकृति-पूजक है। जंगल, नदी, पर्वत, सूर्य, चंद्रमा, वाघदेव, अंगादेव आदि के लिए गीतों के माध्यम से भक्ति प्रकट की जाती है। उदाहरण:
 - “जोगा देवा, बन के राजा, रक्षा करे गावा हमारा ।”
 - “धरती माता, झूले पालना, पुत्र दे तू सुख का खजाना ।”
- 4. **त्योहार और उत्सव गीत** - गोंड समुदाय में अनेक त्योहार जैसे पोदीमेला, नागपंचमी, दीवारी, करमा, होली आदि पर समूह गीत गाए जाते हैं। इनमें सामूहिकता, उल्लास और सांस्कृतिक गौरव अभिव्यक्त होता है। उदाहरण : “पोदी आए, बंधन लाए, मुरली बजे, बांसुरी गाए ।”
- 5. **नारी जीवन और मातृत्व** - गोंडी लोकगीतों में नारी जीवन का कोमल और संवेदनशील चित्रण किया गया है। विवाह, वियोग, माँ-बेटी संबंध, श्रम, और प्रेमकृ सबका गीतात्मक वर्णन होता है।
उदाहरण : “माई के आँचल में धरती बसती, स्नेह लुटाए, पीर छुपाती ।”
- 6. **प्रकृति और पर्यावरणीय चेतना** - गोंडी गीतों में जंगल, पशु, पक्षी, जलस्रोत, पेड़-पौधे आदि के साथ भावनात्मक रिश्ता दर्शाया गया है। पर्यावरण संरक्षण की मौलिक भावना गीतों में स्वाभाविक रूप से विद्यमान है। उदाहरण:
 - “बाघ बोले बन से बाहर मत आओ, जंगल है जीवन, डर मत फैलाओ ।”
 - “वृक्ष बोया गोंडा, फल पाए गाँव ।”
- 7. **सामाजिक संरचना और समुदायबोध** - गीतों में समाज के बुजुर्गों, ग्रामसभा, जातीय संरचना और पंचायत जैसी संस्थाओं का चित्रण होता है। इनसे गोंड समाज की सामूहिकता और आंतरिक अनुशासन का पता चलता है। उदाहरण : “गावा बोले एक स्वर में, पंच कहे न्याय के नाते ।”

गोंडी लोकगीतों में गोंड समाज की जीवन दृष्टि, धार्मिक आस्था, प्राकृतिक अनुराग, और सामाजिक मूल्यबोध रचे-बसे हैं। इन गीतों का सांस्कृतिक अंतर्संबंध अत्यंत घनिष्ठ और जीवंत है, जो उन्हें केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य स्तंभ बनाता है। ये गीत गोंड समुदाय की सांस्कृतिक आत्मा हैं।

निष्कर्ष :

गोंडी लोकगीतों की भाषिक संरचना सहज, सरल किंतु गहराई लिए होती है। ध्वनि, प्रतीक, छंद, और शैली के माध्यम से ये गीत जनजातीय समाज की भावना, परंपरा और संघर्ष को व्यक्त करते हैं। इनकी मौखिक परंपरा और संरचना के संरक्षण की दिशा में गहन शोध की आवश्यकता है। गोंडी लोकगीत न केवल गोंड जनजाति की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं, बल्कि वे उसके सामूहिक जीवन, धार्मिक विश्वास, प्राकृतिक जुड़ाव और सामाजिक संरचना के जीवंत दस्तावेज भी हैं। इस शोध में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हुआ कि गोंडी गीतों की भाषिक संरचना सरल, लयात्मक, ध्वन्यात्मक और संप्रेषणीय है, जो गीतों को लोक के भीतर गहरे पैठने में सहायक बनाती है। इन गीतों में प्रयुक्त शब्दों, वाक्य-विन्यास, ध्वनि प्रयोग और प्रतीकों में गोंड समाज की जीवन शैली की स्पष्ट झलक मिलती है। गोंडी लोकगीतों की शैलीगत विशेषताएँ कृ जैसे अनुप्रास, पुनरुक्ति, बिंब, प्रतीक, संवादात्मकता और भाव-प्रधानता कृ इन्हें न केवल काव्यात्मक बनाती हैं, बल्कि उन्हें जनपदीय साहित्यिक धरोहर का हिस्सा भी बनाती हैं।

शोध से यह भी ज्ञात हुआ कि गोंडी गीतों का सांस्कृतिक अंतर्संबंध अत्यंत गहरा है। ये गीत जीवन के हर पहलू - जन्म से मृत्यु तक, ऋतुचक्र से धार्मिक अनुष्ठानों तक, और व्यक्तिगत भावनाओं से सामूहिक चेतना तक - को समाहित करते हैं। वे लोक की स्मृति, सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक उत्तराधिकार के वाहक हैं।

- गोंडी लोकगीतों की भाषा द्रविड़ भाषिक परिवार से जुड़ी सरल, भावपूर्ण एवं मौलिक है।

- गीतों की शैली में लय, ध्वनि-योजना, प्रतीक और भावनात्मकता का संतुलन है।
- गीतों का प्रयोग जीवन के विविध पर्वों और संस्कारों में होता है।
- गीतों के माध्यम से गोंड समाज की सांस्कृतिक निरंतरता सुरक्षित रहती है।

अनुशंसा :

- गोंडी गीतों का संरक्षण, प्रलेखन और अनुवाद अत्यंत आवश्यक है।
- शिक्षण, अनुसंधान और सांस्कृतिक नीति-निर्माण में गोंड लोकगीतों को उचित स्थान मिलना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- (1) गोंड, रामभरोसे. (2022). *गोंडी गीतों में स्त्री चेतना: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*. भोपाल: भारतीय जनजातीय अध्ययन संस्थान. पृ. 101-118।
- (2) जोशी, किरण. (2017). *गोंडी भाषा की भाषिक विशेषताएँ*. नई दिल्ली: भाषा विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय. पृ. 98-114।
- (3) मिश्रा, मनीष. (2010). *जनजातीय समाज और लोक साहित्य*. इलाहाबाद: साहित्य भवन. पृ. 142-157।
- (4) पाटिल, रवींद्र. (2015). *गोंड जनजीवन और गीत: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य*. नागपुर: विदर्भ जनजातीय अध्ययन केंद्र. पृ. 33-48।
- (5) शर्मा, राजेश. (2016). *गोंडी लोकसंस्कृति में प्रतीक और बिंब*. भोपाल: आदिवासी भाषा साहित्य परिषद. पृ. 66-82।
- (6) तिवारी, रामनारायण. (2014). *मध्यप्रदेश की जनजातियाँ और उनका साहित्य*. भोपाल: लोकवाणी प्रकाशन. पृ. 61-75।
- (7) वर्मा, के.एल. (2005). *जनजातीय जीवन और भारतीय परंपरा*. दिल्ली: साहित्य संदर्भ प्रकाशन. पृ. 122-139।

